



Hargharpanditji

॥ योगिनी एकादशी ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ योगिनी एकादशी ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

योगिनी एकादशी का परिचय

आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को योगिनी एकादशी कहा जाता है। यह भगवान श्री विष्णु को अत्यंत प्रिय तिथि है। पद्म पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में इसकी महिमा का वर्णन मिलता है। इस एकादशी का व्रत समस्त पापों का नाश करने वाला, रोगों से मुक्ति देने वाला तथा अंत में मोक्ष प्रदान करने वाला माना गया है।

युधिष्ठिर का प्रश्न

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उसकी कथा, महिमा और व्रत का फल कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

"हे राजन्! यह योगिनी एकादशी है। इसका व्रत अत्यंत पुण्यदायक है। इसके प्रभाव से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे भगवान श्रीहरि की कृपा प्राप्त होती है। अब मैं तुम्हें इसकी प्राचीन कथा सुनाता हूँ।"

योगिनी एकादशी व्रत कथा

प्राचीन समय में अलकापुरी नगरी में धन के अधिपति भगवान कुबेर राज्य करते थे। वे भगवान शिव के परम भक्त थे और प्रतिदिन मानसरोवर से ताजे पुष्प लाकर भगवान शिव का पूजन करते थे।

उनके यहाँ हेममाली नाम का एक यक्ष सेवक था। उसका कार्य प्रतिदिन मानसरोवर से पुष्प लाकर समय पर भगवान शिव की पूजा के लिए

प्रस्तुत करना था।

हेममाली की पत्नी का नाम विशालाक्षी था। वह अत्यंत सुंदर थी। एक दिन हेममाली अपनी पत्नी के प्रेम में इतना आसक्त हो गया कि वह पुष्प लाने और भगवान शिव की पूजा के लिए समय पर उपस्थित होने का अपना कर्तव्य भूल गया।

जब भगवान कुबेर को यह ज्ञात हुआ कि पूजा के लिए पुष्प नहीं पहुँचे हैं, तो उन्होंने कारण पता कराया। हेममाली को अपने कर्तव्य में लापरवाही करते देखकर कुबेर अत्यंत क्रोधित हुए और बोले—

"तूने भगवान शिव की सेवा में बाधा डाली है। इसलिए मैं तुझे शाप देता हूँ कि तू पृथ्वी पर कोढ़ (कुष्ठ) रोग से पीड़ित होकर दुःख भोगेगा और अपनी पत्नी से भी वियोग सहन करेगा।"

कुबेर के शाप के प्रभाव से हेममाली तत्काल स्वर्ग से पृथ्वी पर गिर पड़ा।

उसका शरीर कोढ़ से ग्रस्त हो गया और वह घोर कष्ट सहने लगा।

बहुत समय तक दुःख भोगने के बाद एक दिन वह हिमालय में महर्षि मार्कण्डेय के आश्रम पहुँचा। उसने विनम्रतापूर्वक अपने अपराध और दुखद स्थिति का वर्णन किया तथा मुक्ति का उपाय पूछा।

महर्षि मार्कण्डेय ने करुणा से कहा—

"हे हेममाली! तुम आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की योगिनी एकादशी का श्रद्धा और नियमपूर्वक व्रत करो। भगवान श्रीविष्णु की कृपा से तुम्हारे सभी पाप नष्ट होंगे और तुम्हें शाप से मुक्ति मिल जाएगी।"

हेममाली ने महर्षि की आज्ञा का पालन किया। उसने पूर्ण श्रद्धा, नियम और भक्ति के साथ योगिनी एकादशी का व्रत किया, भगवान श्रीविष्णु की पूजा की और उनका नाम-जप किया।

व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ समाप्त हो गया, वह पुनः सुंदर और तेजस्वी हो गया तथा उसे अपनी पत्नी और पूर्व दिव्य पद की पुनः प्राप्ति हुई। इस प्रकार योगिनी एकादशी के प्रभाव से वह समस्त दुःखों और पापों से मुक्त

हो गया।

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! योगिनी एकादशी का व्रत करने से अट्ठासी हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने के समान पुण्य प्राप्त होता है। यह व्रत मनुष्य के समस्त पापों का नाश करता है, रोगों से मुक्ति देता है और अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति कराता है।"

योगिनी एकादशी का संदेश

योगिनी एकादशी की कथा हमें यह शिक्षा देती है कि ईश्वर की सेवा और अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। मोह और आसक्ति मनुष्य को उसके धर्म से विचलित कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी भूल स्वीकार कर सच्चे मन से पश्चात्ताप करे तथा भगवान श्रीविष्णु की भक्ति और एकादशी व्रत का पालन करे, तो उसे अपने दोषों से मुक्ति और जीवन में पुनः सुख-समृद्धि प्राप्त हो सकती है।

व्रत का फल

शास्त्रों के अनुसार योगिनी एकादशी का व्रत करने से—

समस्त पापों का नाश होता है।

रोगों और कष्टों से मुक्ति मिलती है।

भगवान श्रीविष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

सुख, समृद्धि और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

अंत में मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

॥ श्री योगिनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥